अय्यूब और उसकी बेटियाँ

Hans-Jörg Ronsdorf · अप्रैल 2021 · अक्टूबर 2026 में संशोधित

अय्यूब की पुस्तक पर व्याख्यानों की एक श्रृंखला के द्वारा मेरा ध्यान अय्यूब की बेटियों की ओर गया। वे प्राचीन काल की एक अद्भुत पुस्तक का केवल एक छोटा-सा विवरण हैं। यह पुस्तक इतिहास की सबसे प्रभावशाली साहित्यिक कृतियों में से एक है। इसे पढ़ना आसान नहीं है, और बाइबल की किसी पुस्तक के हिसाब से यह काफ़ी लंबी है। जो इसे एक ही बार में पढ़ लेता है, वह मन, हृदय और आत्मा के लिए एक सुनामी का अनुभव करता है। आख़िर इसमें यह प्रश्न है कि धर्मी और निर्दोष अय्यूब और उसके परिवार को ऐसा अन्यायपूर्ण दुःख और भाग्य क्यों सहना पड़ता है। यह आज तक का बड़ा प्रश्न है, और अय्यूब की पुस्तक बुद्धि-साहित्य के रूप में इस प्रश्न पर एक सहायक योगदान है। अंतिम उत्तर अय्यूब भी नहीं देता। उत्तर, जैसा अय्यूब और उसके मित्र तर्क करने का प्रयास करते हैं, प्रतिफल का कोई ऐसा धर्मविज्ञान नहीं है, जो बस इतना कह दे: धर्मी को आशीष मिलती है, अधर्मी को दंड। यह सिद्धांत संसार के दुःख का उत्तर नहीं है।

परन्तु यह मेरा विषय बिल्कुल नहीं है। जैसा कहा, बात एक छोटे-से विवरण की है, एक "उप-उत्पाद" की, जिसका संबंध बाइबल में स्त्री की भूमिका के विषय से है। अब तक मैंने न अपनी पुस्तक में और न उसके बाद के लेखों में पुराने नियम की स्त्रियों पर विचार किया है। पुराने नियम में ऐसी स्त्रियाँ हैं, जो भविष्यद्वक्तिन, रानी, न्यायी और अगुवा थीं (जैसे मरियम, दबोरा और हुल्दा भविष्यद्वक्तिनों के रूप में, दबोरा न्यायी के रूप में, एस्तेर रानी के रूप में)। सामान्य नियम के रूप में नहीं, बल्कि अपवाद के रूप में। परन्तु जो इससे यह निष्कर्ष निकालता है कि यह परमेश्वर द्वारा चाही गई भूमिका-व्यवस्था है, उसे पुराने नियम से इस बात का आधार देना होगा कि पुरुष अगुवाई करें और स्त्रियाँ पीछे चलें। सृष्टि-वृत्तांत स्वयं इसके लिए आधार नहीं बन सकता। बल्कि स्त्री और पुरुष के बीच का पदानुक्रमिक असंतुलन पतन का परिणाम है और विभिन्न रूपों में सब युगों के समाजों का एक निर्णायक अंग बन गया है। **पदानुक्रम पतन से पहले नहीं, बल्कि उसके बाद ही प्रकट होता है।**

अय्यूब और उसका बड़ा परिवार कब रहते थे?

यहूदी परंपरा अय्यूब को अब्राहम (और मलिकिसिदक) के समय में रखती है। निश्चय ही इस विषय में और भी सिद्धांत हैं कि यह कहानी कब घटी, परन्तु इस समय के बारे में सोचना और अब्राहम और अय्यूब के जीवन, चुनौतियों और परीक्षाओं की तुलना करना सार्थक है।

तो ये दोनों पुरुष व्यवस्था दिए जाने से पहले, व्यवस्था के अनुसार चलने वाली बलि-सेवा से पहले रहते हैं। उनमें से एक एक राष्ट्र का पिता और उससे बढ़कर सब विश्वासियों का पार्थिव पिता बनता है। ऊज़ देश का अय्यूब इब्री नहीं है, इस्राएली नहीं है। फिर भी वह जीवित परमेश्वर को जानता था। वह उसे कैसे या किस प्रकाशन के आधार पर जानता था, यह हम नहीं जानते। पुस्तक के अंतिम अध्यायों में परमेश्वर ने सीधे अय्यूब से बात की। और अय्यूब ने तो यहाँ तक कहा: "अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं" (अय्यूब 42:5)। यही उसकी भीतरी चंगाई थी। अनुमान है कि अय्यूब जॉर्डन में, स्थायी बस्तियों और मरुभूमि के मिले-जुले क्षेत्र में रहता था।

अय्यूब की कहानी जानी-पहचानी है। शैतान का अपना दृष्टिकोण है कि परमेश्वर पर विश्वास कैसे काम करता है: यह एक सौदा है, या एक गंदा खेल भी। बिना प्रतिफल के परमेश्वर के प्रति कोई वफ़ादारी नहीं होती। मध्य-पूर्व के सबसे धनी पुरुषों में से एक, अय्यूब ही वह उदाहरण बनता है कि शैतान ग़लत है। शायद परमेश्वर पर विश्वास

करने वाले सब लोगों के विषय में नहीं, परन्तु अय्यूब के विषय में। इस प्रमाण की क़ीमत बहुत ऊँची है। फिर भी उसकी कहानी का अंत अय्यूब के घावों को भर देता है। ऐसा अंत, जो वास्तविक जीवन में कम ही मिलता है। बहुत से दुःखी लोग इस जीवन और दुःख में अय्यूब जैसा छुटकारा अनुभव नहीं करते।

अंतिम अध्याय में अय्यूब को सब कुछ दुगना लौटाया जाता है। शैतान ने उससे जो छीना था, वह उसे दुगना वापस मिलता है। उसने 10 बच्चे खोए थे, उसका दुःख समाप्त होने के बाद उसे 10 बच्चे मिलते हैं:

अय्यूब 42:13 उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ भी उत्पन्न हुईं।

14 पहली का नाम उसने यमीमा, अर्थात् पंडुकी, दूसरी का कसीआ, अर्थात् दालचीनी का फूल, और तीसरी का केरेन्हप्पूक, अर्थात् सुरमे की डिबिया रखा।

15 सारे देश में अय्यूब की बेटियों से अधिक सुंदर स्त्रियाँ कहीं न मिलीं। उनके पिता ने उन्हें उनके भाइयों के बीच निज भाग दिया।

इन तीन बेटियों का यह विशेष, बल्कि पुराने नियम में लगभग अद्वितीय, उल्लेख अय्यूब के भाग्य के पलटने को दर्शाता है। बेटियों का यह उल्लेख जितना विशेष और असाधारण है, अय्यूब के भाग्य का पलटना भी उतना ही अनोखा है।

इसमें विचित्र क्या है?

यह कि पितृसत्ता के उस समय में, ऐसे समय में जब स्त्रियाँ वस्तुओं या चीज़ों की तरह संपत्ति और जायदाद थीं, दो बातें ध्यान खींचती हैं:

1. **केवल तीन बेटियों के नाम बताए गए हैं, बेटों के नहीं।**
2. **बेटियाँ अपने भाइयों के समान ही विरासत पाती हैं।**

स्वयं अय्यूब ही नाम रखता है और भाइयों को प्राथमिकता दिए बिना उन्हें विरासत बाँटता है। इसमें पिता अय्यूब का अपनी बेटियों के प्रति बड़ा सम्मान दिखाई देता है, और वह भी अपने समय और संस्कृति की धारा के विरुद्ध। यह केवल एक अनुमान है, प्रमाण के रूप में नहीं, बल्कि एक संकेत के रूप में: क्या दुःखों ने स्त्रियों के प्रति अय्यूब का दृष्टिकोण बदल दिया?

अब्राहम की तरह, और हमारी तरह, वह अपने समय की संतान था। वह और हम उस समाज से प्रभावित हैं, जिसमें हम रहते हैं। उस समय (और आज भी) स्त्री के प्रति दृष्टिकोण उत्पत्ति 3:16 में हव्वा से कहे गए दंड-वचन के अनुरूप था: "तेरी लालसा उस (तेरे पति) की ओर होगी, और वह तुझ पर प्रभुता करेगा"। मैंने सदा कहा है कि पति का पत्नी से और पत्नी का पति से यह संबंध, परमेश्वर ने जैसा सोचा था उसकी तुलना में, हर संभव रूप में नकारात्मक नहीं था। सकारात्मक अपवाद थे, परन्तु वे नियम की पुष्टि करते थे। पितृसत्ता परमेश्वर के अपने परिवार पर पितृत्व का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि सब महाद्वीपों पर विभिन्न रूपों में पाई जाने वाली एक सांसारिक सामाजिक परिवार- और कुल-व्यवस्था है, जो रूढ़िवादी सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) संसार तक पहुँची है।

जो भी हो, अय्यूब कुछ विशेष बात बेटों में नहीं, बल्कि बेटियों में देखता है।

जीवन के सबसे महत्वपूर्ण पाठ हम अच्छी और सुखद बातों से नहीं, बल्कि दुःखों से सीखते हैं। वे हमें बदल देते हैं। परन्तु इसकी कोई निश्चितता नहीं कि वे हमें सदा परमेश्वर की ओर खींचें। अच्छे और बुरे अनुभव हमें परमेश्वर

की ओर खींच सकते हैं, परन्तु उससे दूर भी कर सकते हैं, यदि हमारी प्रतिक्रिया क्रोध और निराशा हो। अय्यूब एक प्रकार से शुद्ध होकर दुःखों से बाहर निकलता है। वह परमेश्वर के साथ मेल में है, और उसी तरह अपने संगी मनुष्यों के साथ भी, अपनी पत्नी से आरंभ करके।

आज बहुत से रूढ़िवादी मसीहियों का लिंग-प्रश्न पर दृष्टिकोण स्त्री की पदानुक्रमिक अधीनता है, और यह निषेध कि वह आराधना में बोले, शिक्षा दे और अगुवाई करे; साथ ही यह कि घरेलू क्षेत्र ही उसका बाइबलीय कार्यक्षेत्र हो। यह दृष्टिकोण आज के पास्टरों और प्राचीनों या कलीसियाओं के अगुवों में इतनी गहराई से जड़ पकड़े हुए है कि इस सांसारिक दृष्टिकोण को छोड़ने और सृष्टिकर्ता और उद्धारकर्ता के दृष्टिकोण को अपनाने के लिए कुछ विशेष होना आवश्यक है। नहीं, मेरा यह अर्थ नहीं कि इसके लिए हर किसी के जीवन में अय्यूब जैसी कहानी आवश्यक है, बल्कि केवल यह कि मन बदलने के लिए किसी सूत्र को बस इधर-उधर कर देना पर्याप्त नहीं है। बात इससे कहीं गहरी है, और नए सिरे से सोचने, उसके पक्ष में खड़े होने और उसके अनुसार कार्य करने के लिए साहस चाहिए।

वैसे, बात यह नहीं है कि पुरुष स्त्रियों को सुंदर न समझें। वे तीन बेटियाँ तो असाधारण रूप से सुंदर थीं, अय्यूब के लिए लगभग तीन स्वर्गदूतों के समान। पुरुष इस सुंदरता को पाना चाहते हैं। वे इस सुंदरता की लालसा करते हैं, और ऐसा करना उन्हें उचित भी है। परन्तु किसी मनचाहे ढंग से उपयोग की जाने वाली संपत्ति के रूप में नहीं, बल्कि उसकी रक्षा करने, उसका आनंद लेने और उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने के लिए। जैसा अय्यूब ने स्वयं जीकर दिखाया (अय्यूब 31:1)।

नाम

तीन बेटियों के नाम हमारे कानों को असामान्य लगते हैं, परन्तु पुराने नियम में अक्सर की तरह अर्थपूर्ण हैं। बेनेडिक्ट पीटर्स (Benedikt Peters) अपनी अय्यूब-टीका में उनकी व्याख्या इस प्रकार करते हैं:

"पद 14. '**और उसने पहली का नाम रखा ...**': हमें केवल अय्यूब की बेटियों के नाम पता चलते हैं। पहली का नाम **यमीमा (Jemima)** था, jəmîmâh, jôm से, 'दिन', अर्थात् लगभग '**दिन जैसी उजली**'। यह मोटे तौर पर यू-नानी स्त्री-नाम हेलेन के समान है, 'उज्ज्वल चमकने वाली'। दुःख की रात के बाद अब अय्यूब के लिए समृद्धि का एक उजला दिन उदय हुआ है। एक अरबी शब्द-धातु के अनुसार इस नाम का अर्थ 'कबूतरी' भी हो सकता है।

दूसरी का नाम **कसीआ (Kezia)** था, qəṣîʿâh, जो सुगंधित मसाला तज (कैसिया) है (निर्गमन 30:24; भजन संहिता 45:8)। केरेन्हप्पूक, qæræn happûk, वह सींग है, जिसमें स्टिबियम, अर्थात् स्त्रियों का काला सुरमा (आँखों का काजल), रखा जाता था।"[1]

"तीन नाम, जो उसकी पुनःस्थापित समृद्धि की ओर संकेत करते हैं (उत्पत्ति 4:25; 5:29)।

यमीमा - "दिन का प्रकाश", उसकी दुर्दशा की 'रात' के बाद; परन्तु मॉरर (MAURER) के अनुसार, 'एक कबूतरी'।

कसीआ - "तज (कैसिया)", एक सुगंधित जड़ी-बूटी (भजन संहिता 45:8), उसकी घिनौनी साँस (19:17) और उसके फोड़ों के स्थान पर।

केरेन्हप्पूक - "स्टिबियम का सींग", एक रंग, जिससे स्त्रियाँ अपनी पलकें रंगती थीं; उसके "धूल में मैले हुए सींग" के विपरीत (या: मेरा गर्व और मेरा सम्मान कीचड़ में पड़े हैं, Neues Leben – जर्मन बाइबल अनुवाद) (अय्यूब

16:15)।

ये नाम उसकी बेटियों की सुंदरता की ओर भी संकेत करते हैं।"[2]

एक निज भाग

"पद 15. 'भाइयों के बीच ... निज भाग' - पूर्व में बेटियों के लिए एक असामान्य अनुग्रह, जो यहूदी व्यवस्था के अनुसार केवल तभी विरासत पाती थीं जब बेटे न हों (गिनती 27:8); समृद्धि और एकता का एक प्रमाण।"[3]

"और उनके पिता ने उन्हें उनके भाइयों के बीच उनका निज भाग दिया। अय्यूब का यह कार्य, जो मूसा की व्यवस्था के नियमों के बिल्कुल विरुद्ध है (गिनती 27:8), परन्तु जिसकी समानता विशेष रूप से इब्री प्रथाओं की अपेक्षा अरबों की कुछ पारिवारिक रीतियों में अधिक मिलती है, इस उद्देश्य से था कि बेटियाँ विवाह के बाद भी अपने भाइयों के बीच रह सकें; **इसलिए इसका उल्लेख उस भाई-बहन की एकता के चिह्न के रूप में किया गया है, जो अय्यूब की इन बाद की संतानों में भी वैसी ही थी जैसी पहले वालों में (तुलना करें अध्याय 1:4)।**"[4]

अपनी अय्यूब-टीका में बेनेडिक्ट पीटर्स सटीक लिखते हैं: "जब परमेश्वर हमें नाम लेकर बुलाता है या हमें कोई नाम देता है, तो वह दिखाता है कि हम उसके लिए क्या अर्थ रखते हैं। अय्यूब की पुनःस्थापना निश्चय ही युगों के अंत में सब बातों की पुनःस्थापना का बयाना है। तब स्त्रियाँ भी अंततः उस पद तक उठाई जाएँगी, और अंततः उन्हें वह सम्मान मिलेगा, जो मानव-इतिहास की सहस्राब्दियों में उनसे छीना गया, परन्तु जिसे देना पुरुषों का कर्तव्य है: '**वैसे ही हे पतियो, तुम भी बुद्धिमानी से उनके साथ रहो, जैसे एक निर्बल पात्र अर्थात् स्त्री के साथ, और उनका आदर करो, क्योंकि वे भी जीवन के अनुग्रह की संगी वारिस हैं, जिससे तुम्हारी प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ**' (1 पतरस 3:7)। पुरुषों को अपनी पत्नियों को वह आदर देना चाहिए, जो वारिस होने के नाते उनका हक़ है, क्योंकि '**उनके पिता**' ने उन्हें '**उनके भाइयों के बीच निज भाग**' दिया है (तुलना करें गिनती 27:7)।"[5]

पतरस अपने पुरुष-प्रधान समय में यह आवश्यक समझते हैं कि विश्वासी पुरुषों का भी ध्यान इस ओर दिलाएँ कि अब स्त्रियाँ भी समान रूप से विरासत पाती हैं। मूसा की व्यवस्था में ऐसा केवल तभी होता था, जब भाई न हों।

परन्तु मसीह में न नर है न नारी (गलातियों 3:28)। और इसलिए यह एक आशीष होती, यदि बेनेडिक्ट पीटर्स भी स्त्रियों को केवल कुछ हद तक उस पद तक न उठाते, जो उनके मत में स्त्रियों का हक़ है, बल्कि पूरा मार्ग तय करते। उन पर एकतरफ़ा अधीनता थोपना, उन्हें बोलने (प्रार्थना करने, प्रचार करने, शिक्षा देने) और अगुवाई करने से मना करना – ठीक यही पतित संसार के चिह्न हैं, न कि उस नई सृष्टि के, जो केवल भविष्य में नहीं आएगी, बल्कि नए मनुष्य के रूप में कलीसिया के साथ आरंभ हो चुकी है (इफिसियों 2:15)।

अय्यूब की बेटियों के विषय में इतना ही, जो एक प्रकाश-स्तंभ की तरह भीड़ से अलग दिखाई देती हैं और प्राचीन काल में ही इस बात का संकेत थीं कि स्त्रियाँ कितनी मूल्यवान और अपने भाइयों के समान दर्जे की होनी चाहिए। यदि तब ऐसा था, तो आज तो और भी अधिक।

टिप्पणियाँ

1. Benedikt Peters, Kommentar zum Buch Hiob (जर्मन में), Bielefeld: CLV 2020, पृ. 412।
2. Jamieson, R. / Fausset, A. R. / Brown, D., Commentary Critical and Explanatory on the Whole Bible, I, Logos Research Systems, Inc., Oak Harbor, WA 1997, 344।

3. Jamieson, R. / Fausset, A. R. / Brown, D., Commentary Critical and Explanatory on the Whole Bible, I, Logos Research Systems, Inc., Oak Harbor, WA 1997, 344।
4. Lange, J. P. / Schaff, P. / Lewis, T. / Zöckler, O. / Evans, L. J., A Commentary on the Holy Scriptures: Job, Logos Bible Software, Bellingham, WA 2008, 631।
5. Peters, Kommentar zum Buch Hiob, पृ. 412।